that crashed, but I would like to say that six of these planes were tested. Six out of the fourteen planes were tested. Each one of these planes was overhauled and was brought up to par. It is not as if this plane which was below par was continued to be flown below par and then it crashed. This is one point. Secondly, I quoted the Court of Enquiry. This point was also brought before the Judge and after a very careful study he came to the conclusion that the crash was as a result of navigational negligence.

***311 The questioner (Shri Suraj Parsad) was absent For answer Vide Gol S 30-31 impara]**

श्रौषधियों का श्रायात

*501. श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : क्या पैट्रोलियम श्रौर रसायन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) पिछले तीन वर्षों के दौरान विदेशों से प्रतिवर्ष कितने-कितने मूल्य की श्रौषधियां मंगाई गई;

(ख) क्या इनके श्रायात में कमी करने की कोई योजना सरकार के विचाराधीन है श्रौर इस दिशा में श्रब तक कितनी प्रगति हुई है; श्रौर

(ग) क्या सरकार श्रायुर्वेदिक श्रौषधियों को वैज्ञानिक ढंग से बढ़ावा देकर श्रौर उनका प्रचार करके इस विषय में सफलता पाने की श्राशा रखती है ?

IMPORT OF MEDICINES

*501. SHRI J. P. YADAV : Will the Minister of PETROLEUM AND CHEMICALS be pleased to state .

(a) what is the value of the medicines imported into the country every year during the last three years;

(b) whether there is any scheme under Government's consideration to reduce these imports and the progress made so far in this regard; and

(c) whether Government expect to achieve success in this matter by scientific promotion and propagation of Ayurvedic medicines?

+ [ ] English translation.

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF PETROLEUM AND CHEMICALS (SHRI DALBIR SNGH) : (a) Import of finished medicines is not generally permitted, except in very special cases like anti-cancer drugs. The total value of drugs and pharmaceuticals, including drug intermediates, imported during the last three years was as under :

	Rs. crores
1968-69 . . .	24·05
1969-70 . . .	26·19
1970-71 . . .	27·87

(b) In accordance with Government's policy to progressively reduce and eventually eliminate import of drugs, all possible assistance is given to the drug and pharmaceutical industry for taking up production of bulk drugs as well as intermediates from indigenous raw materials wherever practicable. Further, parties applying for licences for production of formulations based on imported drugs are advised to undertake production of bulk drugs on a phased basis. This policy has helped in stepping up indigenous production and thereby reducing imports. The proportion of imports to indigenous production has steadily declined and wide variety of drugs are now being produced in the country from basic stages.

(c) The Central Council for Research on Indian Medicines and Homoeopathy has undertaken research programmes with a view, among other things, to locate indigenous substitutes for imported products.

*[पैट्रोलियम श्रौर रसायन मंत्रालय में उप मंत्री (श्री दलबीर सिंह) : (क) एण्टी-कैन्सर श्रौषधि जैसी विशेष श्रौषधियों को छोड़कर, सज्जित (तैयार शुदा) दवाइयों के श्रायात के लिए सामान्यत: श्रनुमति नहीं है। गत तीन वर्षों में श्रायातित श्रौषधियों एवं भेषजों (मध्यवर्ती श्रौषधियों सहित) का कुल मूल्य निम्न प्रकार था :—

	करोड़ रुपये
1968-69 . .	24·05
1969-70 . .	26·19
1970-71 . .	27·87

+ [ ] Hindi translation.

(ख) औषधियों के आयाय को उत्तरोत्तर कम करना एवं अन्ततः समाप्त करना ही सरकार की नीति है। इस नीति के अनुसार, जहां कहीं पर व्यवहारिक है, देशीय कच्चे माल से, प्रपुञ्ज औषधियों एवं मध्यवर्ती औषधियों का उत्पादन करने के लिए, औषधि एवं भेषजिक उद्योग को समस्त संभाव्य सहायता दी जा रही है। इसके अतिरिक्त, आयातित औषधियों पर आधारित सूत्रयोगों के उत्पादन के लिए लाइसेन्सों के संबंध में प्रार्थना पत्र, प्रस्तुत करने वाली पार्टियों को, प्रभाजित आधार पर प्रपुञ्ज औषधियों के उत्पादन को प्रारंभ करने के लिए परामर्श दिया गया है। उपर्युक्त नीति के अपनाने से देशीय उत्पादन में वृद्धि तथा आयातों में कमी करने में सहायता मिली है। आयात तथा देशीय उत्पादन के अनुपात में धीरे-धीरे कमी हुई है और देश में प्रारंभिक प्रावस्थाओं से ही औषधियों की विभिन्न किस्मों का अब उत्पादन किया जा रहा है।

(ग) इंडियन मैडिसिन्स और होम्योपैथि पर अनुसंधान के लिए केन्द्रीय परिषद ने अन्य वस्तुओं के साथ-साथ आयातित दवाइयों के स्थान पर देशीय दवाइयों को स्थापित करने के विचार से अनुसंधान कार्य प्रारंभ किया है।]

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : श्रीमन्, उन्होंने कहा है कि धीरे-धीरे विदेशी दवाइयां कम की जा रही हैं लेकिन जो हमने रिपोर्ट में पढ़ा है उसके अनुसार पहले 25 करोड़ था उसके बाद 26 करोड़ हुआ, उसके बाद 1970-71 में 27 करोड़ हुआ। पता नहीं उनके डिक्लाइन की क्या परिभाषा है। मैं पूछना चाहता हूं कि जो विदेशी कंपनियां दवाई की डीलिंग्ज करती हैं, उनके भारतीयकरण की कोई योजना सरकार के पास है क्या ? आपने जो आयुर्वेदिक दवाइयों के बारे में बताया कि राष्ट्रीय संस्थान है, तो मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या सरकार आयुर्वेद को राष्ट्रीय पद्धति घोषित करके, जिस प्रकार से अंग्रेजी दवाइयों की सुविधाएं पार्लियामेन्ट के सदस्यों को या सरकारी नौकरों को देते हैं रिइम्बर्समेन्ट की उसी प्रकार आयुर्वेदिक औषधियों में सुविधाएं देगी ?

SHRI DALBIR SINGH : Sir, this increase is proportionately very low to the increase in production which, in 1968, is of Rs. 200 crores, of Rs. 225 crores in 1969, of Rs. 265 crores in 1970 and of Rs. 300 crores in 1971. It can be seen from here that the increase in production is so large.

DR. BHAI MAHAVIR : Let him answer in Hindi, Sir.

MR. CHAIRMAN : You can answer in your own way.

SHRI N. G. GORAY : I want to point out : Let him answer in his own way. But we should at least understand it. We want to know whether the imports are increasing or decreasing.

MR. CHAIRMAN : It might be that before he sits down, he would have answered it. Therefore, you have to wait till then.

SHRI LOKANATH MISRA : Do you expect him to explain the entire thing in the last sentence?

श्री दलवीर सिंह : देश के अंदर दवाइयों का उत्पादन बढ़ता जा रहा है और इस उत्पादन के बढ़ते हुए हमें जहां सारे फील्ड के अंदर देखना है वहां पर जैसा मैंने बतलाया ये सारे फिगर्स देकर कि उनका उत्पादन 1968-69 के अंदर 200 करोड़ रु० था और 1973 के अंदर 300 करोड़ रु० हो चुका है। जैसा उन्होंने कहा कि 1968 के अंदर 24.5 करोड़ था और 1971 के अंदर 27.87 करोड़ था तो प्रपोर्शनेट्ली जो हमारा प्रोडक्शन है वह बहुत ज्यादा बढ़ा है, परसेन्टेज हमारा बहुत ज्यादा बढ़ा है। इसलिए आप यह नहीं कह सकते कि हमारा जो इम्पोर्ट है, उसके ऊपर हम और ज्यादा डिपेन्ड करेंगे क्योंकि हमारे देश के अंदर जो हमारे प्रोग्राम

हैं उसके अनुसार हमारा उत्पादन बहुत ज्यादा बढ़ रहा है।

श्री सभापति : आयुर्वेद का भी सवाल उन्होंने पूछा था।

श्री दलबीर सिंह : जहां तक आयुर्वेद का सवाल है, वह हेल्थ मिनिस्ट्री का सब्जेक्ट है अभी तक और हमारी मिनिस्ट्री से इसको डील नहीं किया जाता।

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : श्रीमन्, मैंने तो दूसरा प्रश्न पूछा था। मैंने पूछा था कि पहिले 20 करोड़ रुपये की विदेशी दवाइयां मंगाई गई, फिर 25 करोड़ रुपये की और उसके बाद 27 करोड़ रुपये की। इनके जवाब में मंत्री जी ने बतलाया कि विदेशी दवाई मंगाने में डिक्लाइन हो रहा है, लेकिन जो कुछ उन्होंने बतलाया उससे पता चलता है कि हर साल विदेशी दवाइया मंगाने में 11 करोड़ रुपये की वृद्धि हो रही है। इसलिए जो मैंने वृद्धि शब्द का प्रयोग किया और जो उन्होंने डिक्लाइन शब्द का प्रयोग किया है, उसमें फर्क है। दूसरा प्रश्न हमने यह पूछा था कि विदेशी कंपनियों द्वारा जो धन भारत से बाहर भेजा जा रहा है उसको देखते हुए इन कंपनियों का भारतीयकरण करने के सम्बन्ध में सरकार कोई रुचि रखती है। मैंने यह सवाल पूछा था लेकिन उन्होंने प्रोडक्शन के सम्बन्ध में जवाब दिया।

MR. CHAIRMAN : Do you wish to add anything more?

श्री दलबीर सिंह : देशी दवाईयों के बारे में मैं क्या कहूं ? यह सवाल तो स्वास्थ्य मंत्रालय का है।

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : आपने तो प्रोडेक्शन के बारे में बतलाया और अभी आपने प्रश्न के उत्तर में कहा कि 1968 में 20 करोड़ रुपये की दवाईयां बाहर से आई, 1969-70 में 25 करोड़ रुपये की और 1970-71 में 27 करोड़ रुपये की दवाईयां बाहर से आई। फिर आपने कहा कि जो विदेशी दवाईयां मंगाई जा रही हैं वे अनुपात में कम इम्पोर्ट की जा रही हैं। तो मैं यह जानना चाहता हूं कि इस कम इम्पोर्ट के अनुपात के बारे में आपका क्या कहना है ? इसके साथ ही साथ आपने विदेशी कम्पनियों के राष्ट्रीयकरण करने के बारे में सरकार का क्या रवैया है, यह नहीं बतलाया।

श्री दलबीर सिंह : सवाल यह है कि जहां तक दवाईयों का सवाल है आजकल के वातावरण में और रिसर्च को देखकर दुनियां में एक न एक नई दवाईया चल रही है। अब रहा सवाल कि हम इम्पोर्ट क्यों करें, हमें कई दफा ऐसी जरूरत हो जाती है कि बिना इम्पोर्ट किये कोई चारा नही रहता है। हमारे पास कोई तरीका नहीं है कि हम यहां पर अपनी जरूरत को यहां की दवाईयों से पूरा कर सकें और इन दवाईयों का इम्पोर्ट करना हमारे देश के इन्टेरस्ट में है। इसलिए इस तरह की दवाईयों को इम्पोर्ट करने के लिए हमें कुछ सालों तक विदेशों पर निर्भर करना पड़ेगा आजकल के वातावरण को देखते हुए।

SHRI YASHPAL KAPUR : Is the Government aware of the huge profit being earned by the foreign firms resulting in high prices of medicines and loss of foreign exchange to the country; if so, what steps are contemplated by the Government to find a remedy to this disease?

SHRI DALBIR SINGH : The supplementary has no connection with the main question.

SHRI BHUPESH GUPTA : In view of the people suffering from diseases and in view of the high prices of the drugs, has the Government considered the advisability of nationalising the drug industry especially those owned by foreign concerns in the country? May I know why there is delay in nationalising the drug companies?

SHRI DALBIR SINGH : I have not been able to follow the question.

MR. CHAIRMAN : Will you kyindl repeat?

SHRI BHUPESH GUPTA : Has the Government considered the advisability of nationalising at least the foreign drug companies in the country, and whether it has occurred to them that unless that is done we cannot meet the needs of the people especially the Government.

SHRI DALBIR SINCH : There is no such proposal under consideration of the Government at present to nationalise the idrug ndustry.

MR. CHAIRMAN : There is no proposal for nationalising this industry.

SHRI BHUPESH GUPTA : What is the meaning of understanding my question then?

SHRI BABUBHAI M. CHINAI : In view of the fact that the hon'ble Minister has pointed out that there is increase in imports during the last three years in foreign medicines and that this increase is due to medicines imported to cure cancer and other diseases, may I know, Sir, from the hon'ble Minister whether there is really a rise in cancer and other diseases which he has mentioned or is it because the foreigners are charging more?

SHRI DALBIR SINGH : Sir, this rise is.

SHRI BABUBHAI M. CHINAI . May I repeat the question for his benefit?

MR. CHAIRMAN : Is the rise in import due to rise in prices or rise in diseases like cancer?

SHRI CHANDRA SHEKHAR : Both.

SHRI DALBIR SINGH : Both are going on simultaneously.

श्रीमती विद्यावती चतुर्वेदी : श्रीमन्, मैं केवल यह पूछना चाहती हूं कि जैसे एलापैथी के लिए विश्वसनीय रसायनशालाओं का निर्माण भारत सरकार ने किया है, क्या उसी तरह से आयुर्वेदिक दवाओं के लिए कोई रसायनशालाओं का निर्माण देश के अन्दर हुआ है जिनसे विश्वसनीय दवाएं देश में जनता को प्राप्त हो सकें ? अगर ये रसायनशालाएं खोली गई हैं तो ये कहां है और कौन-कौन सी हैं; और अगर नहीं खोली गई हैं तो क्यों ?

SHRI DALBIR SINGH : It concerns the Health Ministry.

डा० भाई महावीर : श्रीमन्, दवाओं को बाहर से मंगवाने में जो कीमत देनी पड़ती है वह दुनिया के अन्दर जो उनकी कीमत है उससे बहुत ज्यादा है और स्टेट ट्रेडिंग कारपोरेशन के द्वारा पूल करके मंगवाने की जो योजना थी वह इसलिए थी कि दवाएं सस्ती मिल सकेंगी लेकिन वे सस्ती नहीं हुई और इसका कारण यह है कि पेटेन्ट्स ला के आधीन हम उन दवाओं को यहां बनाने से मजबूर हैं, नहीं बना सकते। उस पेटेन्ट्स ला की उपेक्षा कई देशों ने की है और अगर हम भी करें तो इम्पोर्ट करने के लिए जो बहुत बड़ी धनराशि देनी पड़ती है उससे बच सकेंगे। क्या मंत्री जी बताएंगे कि सरकार इस विषय में भी विचार कर रही है या नहीं ?

SHRI OM MEHTA : We have already amended the patent law. There was a joint Select Committee and its report was discussed and approved by the House.

डा० भाई महावीर : मैं यह कह रहा हूं कि क्या आप पेटेन्ट्स ला को खत्म करेंगे और अपने यहां पर उन दवाओं को मेन्यूफेक्चर करेंगे जिनके लिए विदेशी कीमतों से कहीं ज्यादा कीमत विदेशी कम्पनियों को देनी पड़ती हैं और स्टेट ट्रेडिंग कारपोरेशन के जरिए पूल्ड इम्पोर्ट करने के बाद भी कीमत घटी नहीं, बढ़ी है ? इसके बारे में मंत्री जी बताएं।

श्री दलबीर सिंह : कीमत केवल एक बात पर निर्भर नहीं होती, सारी चीजों का अन्दाजा लगाकर होती है।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : अन्दाजा काहे का लगाया जाता है।

श्री ए. पी. जैन : हो गया, जबाब हो गया।

डा० भाई महावीर : श्रीमन, कुछ तो जवाब दिलवाइए।

MR. CHAIRMAN : Next question.

गणतन्त्र दिवस समारोह सम्बन्धी समिति

*502. **श्री मानसिंह वर्मा** : क्या रक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या गणतन्त्र दिवस समारोह का आयोजन करने के लिए प्रति वर्ष कोई समिति बनाई जाती है ;

(ख) यदि हां, तो इस समिति के सदस्यों के नाम और पदनाम क्या हैं ;

(ग) यदि उपरोक्त भाग (क) का उत्तर 'ना' हो, तो इस समारोह की व्यवस्था के लिए कौन उत्तरदायी है ; और

(घ) समारोह के लिए निमंत्रण पत्र जारी करने के लिए किस कसौटी से काम लिया जाता है ?

† [COMMITTEE ON REPUBLIC DAY CELEBRATIONS

*502. SHRI MAN SINGH VARMA : Will the Minister of DEFENCE be pleased to state :

(a) whether any Committee is set up every year to organise the Republic Day Celebrations ;

(b) if so, the names of the members of the Committee and their designations ;

(c) if the reply to part (a) above be in the negative, who is responsible for the arrangements made for the celebrations; and

(d) what is the criterion followed for issuing invitation cards ?]

रक्षा मंत्रालय (रक्षा उत्पादन) में राज्य मंत्री (श्री विद्या चरण शुक्ल) : (क) से (घ) एक विवरण सदन के पटल पर रख दिया गया है। [देखिए परिशिष्ट LXXIX, अनुपत्र संख्या 56]

† [THE MINISTER OF STATE (DEFENCE PRODUCTION) IN THE MINISTRY OF DEFENCE (SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA) : (a) to (d) A statement is laid on the Table of the House. [See Appendix LXXIX, Annexure No. . 6]

श्री मानसिंह वर्मा : श्रीमन, गणतन्त्र दिवस के अवसर पर बैठने के स्थान की अव्यवस्था तो प्रति वर्ष ही होती रहती है किन्तु इस वर्ष तो अव्यवस्था अपनी चरम सीमा पर पहुंच गई। श्रीमन, अपने अनेक साथी संसद-सदस्यों को स्थान न मिलने के कारण से निराश होकर बाहर जाते मैंने देखा, अनेक को स्थान नहीं मिला, उनके साथ जो महिलाएं थीं उनको सामने दरी पर बैठने के लिए विवश होना पड़ा। मैं माननीय मंत्री जी से यह पूछना चाहता हूं कि संसद्-सदस्यों वाले क्षेत्र के लिए संसद-सदस्यों के अतिरिक्त और किन-किन लोगों के लिए पास जारी किए जाते हैं ? एक बात। दूसरी बात, जितने पास जारी किए जाते है उतने स्थानों का प्रबन्ध किया जाता है या नहीं ?

श्री विद्या चरण शुक्ल : जैसा माननीय सदस्य ने कहा, हमारे गणतन्त्र दिवस के समारोह में काफी लोग आना चाहते है और काफी भीड़ रहती है और कुछ न कुछ अव्यवस्था कहीं न कहीं हो ही जाती है। इस बार, जैसा आप जानते है, विशेष कारणों से बहुत ज्यादा भीड़ आई थी और जहां राष्ट्रपति जी सलामी लेते है उस स्थान को भी बदला गया था जिससे सलामी-स्थल पर ज्यादा लोग उपस्थित रह सकें। संसद्-सदस्यों के लिए विशेष प्रबन्ध किया गया था और उन्हें बिठाने के लिए भी इन्तजाम ठीक से किया गया था।

† [ ] English translation.